सिन्धी मुस्लिम समुदाय और उसका शिक्षा से जुड़ाव

- चिनेसर खान

राजस्थान प्रदेश के पश्चिमी सीमा से लगे जालौर, बाड़मेर, जैसलमेर बीकानेर जिलों में रहने वाले मुस्लिम समुदाय में अधिकतर जनसंख्या सिन्धी मुसलमानों की है। इनमें सर्वाधिक सिन्धी मुसलमान बाड़मेर जिले के शिव, गडरारोड, रामसर चौहटन, सेड़वा, धनाऊ पंचायत समिति ब्लॉकों में रहते हैं। रेत के धोरों में बसा एक समुदाय जिसकी परिपाटियां, संस्कार, पहनावा और बोली अन्य मुस्लिम अल्पसंख्यकों से अलग है। इनकी आबादी में मुख्य पाकिस्तान के सिन्ध के अलावा राजस्थान की सीमाओं पर बसा यह समुदाय शैक्षिक रूप से पिछड़ा हुआ है। अपने सामाजिक ताने–बाने व अनोखी रीति–रिवाजों के कारण भारतीय मुसलमानों में अपना विशिष्ट स्थान रखता है। मुख्यतः सिन्धी मुसलमान दो तरह के होते हैं:–

1. ढ़ाटी सिन्धी– ये जोधपुर, जालौर, बाड़मेर से सिन्ध के मिटठी, चैलार तक के परिक्षेत्र में बसे हुए हैं।
2. खाड़ाली–जैसलमेर, बीकानेर से पाकिस्तान के नगरथटा तक के क्षेत्र में बसे हुए हैं।

इस संक्षिप्त अध्ययन में हम यह समझने का प्रयास करेंगे कि थार की भौगोलिक परिस्थितियों में बसे सिन्धी मुसलमान समुदाय की संस्कृति (पहनावे, रीति–रिवाज, संस्कार) की दशा–दिशा किस प्रकार की है। इससे जुड़े मिथक और यथार्थ क्या हैं? इन मिथक और यथार्थों का उनके जीवन पर क्या प्रभाव पड़ता है? रेगिस्तानी क्षेत्र इनके जीवन की निकटता (आपसी मेल–जोल) को बढ़ाता है या कम करता है? इन सब तथ्यों को समझने के लिए हम यहां रामसर तहसील के सिन्धी मुस्लिम समुदाय के गांव–गागरिया का अध्ययन करेंगे ।

गागरिया-भौगोलिक बसावट

गागरिया गांव, बाड़मेर जिला मुख्यालय से 65 किलोमीटर व रामसर तहसील से मात्र 5 किलोमीटर

आगे मुनाबाब रोड पर समुद्रतल से 140 मीटर ऊंचाई पर बसा हुआ है। रेलवे लाईन और बाड़मेर मुनाबाब रोड़ दोनों ही इस गांव के बीच से गुजरते हैं। इस प्रकार यह गांव दो भागों में बंटा हुआ है। रेलवे लाईन के दक्षिण में बसी बस्ती को जूना गागरिया व उत्तर में बसी बस्ती को नया गागरिया के नाम से जाना जाता है। स्थानीय लोग इसे गागरिया गांव के नाम से जानते हैं। इस गांव से 4 किलोमीटर दूर गागरिया रेलवे स्टेशन है। गांव रेत के धोरों के बीच बसा हुआ है।

गागरिया गांव के स्थानीय लोग और बुजुर्ग बताते हैं कि यह गांव लगभग 400–500 वर्षों पहले बसा था। इस गांव के जूना गागरिया के पश्चिम में एक प्राचीन शिला लेख हैं जो ब्राह्मी लिपि में लिखा है। जिसके तथ्य अभी पढ़े नहीं जा सके हैं। प्राचीन समय से इस गांव के पानी की व्यवस्था हेतु दो जुड़वा तालाब हैं, जिन्हें नीलसर तालाब कहते हैं। इन तालाबों में वर्षा का पानी वर्ष पर्यन्त रहता है। जो आसपास के गावों के लिए पानी की पूर्ति भी करता है। गांव के उत्तर में दलियावाली डूंगरी से वर्षा के समय छोटा नाला निकलता है, जो गागरिया पार से

होकर नीलसर नदियों तक जाता है। गांव के उतर–पश्चिम में किसी समय 400 बेरियों का पार था। बेरियों का पार में एक बेरी में एक घड़ा पानी निकलता था। इस कारण स्थानीय लोग इसे गगरियों पार के नाम से जानते थे। इसी पार के नाम पर ही कालान्तर में गांव का नाम गगरिया हुआ तथा अंग्रेजी राज में इसको अंग्रेजी लिपि में लिखते–लिखते गांव का वर्तमान नाम गागरिया पड़ा। वर्तमान समय में गांव की पेयजल आपूर्ति पाईप लाईनों द्वारा तथा आसपास स्थित पारों (छोटे कुंए) के द्वारा होती है।

गांव की फसलें

इस क्षेत्र में केवल खरीफ की फसलें ही होती हैं। जमीन के नीचे का पानी खारा होने के कारण रबी की फसलें नहीं होती हैं। इस गांव के खेतों में ज्वार, बाजरा, मूंग, मोठ मुख्य फसलें ही होती हैं। अच्छी वर्षा होने पर तिल भी हो जाते हैं। गांव की अधिकतर जमीन बारानी अवल (मध्यम स्तर से अच्छी) की है तथा उपजाऊ व तालर (समतल) की जमीनें होने के कारण अच्छी वर्षा होने पर अनाज बहुत होता है।

गांव की आर्थिक स्थिति

गांव के अधिकतर लोग खेती व पशुपालन से जुड़े हुए हैं। कुछ लोग सर्दियों के मौसम में ऊनी वस्त्र व कम्बल पंजाब से लाकर गुजरात में उधारी पर बेचते हैं। अक्टूबर से दिसंबर तक ये वस्त्र गुजरात के गांव में वर्षों से बेचते आ रहे हैं। होली के बाद गुजरात पैसे उगाही या उधारी प्राप्त करने जाते हैं। जून तक वापस आकर खेतों की साफ–सफाई करते हैं तथा वर्षा होने पर खेत बुवाई करते हैं। कुछ लोग मजदूरी करने गुजरात भी चले जाते हैं। पूरे क्षेत्र के लोगों की तरह इस गांव के लोग भी गुजरात मजदूरी और व्यापार हेतु चले जाते हैं।

गांव की स्वास्थ्य सेवाएं

इस गांव में किसी भी प्रकार की सी.एच.सी. या पी.एच.सी. उप–स्वास्थ्य केन्द्र स्थित नहीं हैं। छोटी–मोटी हारी बीमारी के लिए भी 5 किलोमीटर दूर रामसर इलाज करवाने जाना पड़ता है।

घर व बसावट

गांव में 95 प्रतिशत घर कच्चे हैं तथा गांव में बिजली है। गांव पक्की सड़कों से जुड़ा हुआ है तथा गांव में एक मोबाइल टावर भी लगा हुआ है। घरों की बसावट परंपरागत है, जिसमें घरों के बीच काफी जगह होती है। प्रत्येक घर में पशुओं के लिए बाड़ा और खुली जगह है। घरों की बसावट के आधार पर समाज में किसी प्रकार की असमानता का अहसास नहीं होता है। लेकिन अब कुछ घर पक्के बन गए हैं, जो स्तरीकरण का अहसास कराने लगे हैं।

जनसंख्या

2011 की जनगणना के अनुसार गांव की कुल आबादी 1419 है। जिसमें 742 पुरुष व 677 स्त्रियां हैं जो स्त्री–पुरुष राष्ट्रीय अनुपात से कम है। गांव में 0–6 वर्ष के बच्चे 312 है जिसमें बालक 166 व बालिका 146 है। गांव में कुल साक्षर 562 हैं जिसमें पुरुष 387 व स्त्रियां 178 है। इस प्रकार गांव की स्थिति राष्ट्रीय स्तर व जिले के स्तर की साक्षरता दर से बहुत पीछे है।

गांव का पहनावा

गांव में पुरुष तेवटा (सफेद धोती) बिना लांग की पहनते हैं, जिसे स्थानीय बोली में खथी कहते हैं। ऊपर कमीज जिसे स्थानीय बोली में खमीश कहते हैं, पहनते हैं। सिर पर अधिकतर बड़े–बुजुर्ग सफेद पोतीया बांधते हैं, तथा जवान तहमद बांधते है। महिलाएं अधिकतर घाघरा–कांचली पहनती हैं। कुछ प्रौढ़ महिलाएं बाधणु /बन्धेज के सूती वस्त्र, बून्द, ओढ़ण, चून्दड़ी, काचली पहनती हैं। महिला–पुरुष बन्धेज के सूती वस्त्र पहनना पसन्द करते हैं। पुरुष सर पर सिन्धी टोपी पहनते हैं और गले में अनरख डालते हैं। सिन्धी मुसलमानों का पहनावा ही उनकी पहचान है। औरतें स्थानीय जूतियां पहनती हैं, जो मोटे चमड़े, छोटे पंखे व रंगीन फुदो वाली स्थानीय कारीगरों द्वारा तैयार की हुई होती हैं। सुहागन स्त्रियां चूड़ा पहनती हैं। मुस्लिम समुदाय में केवल सिन्धी मुसलमान ही एक ऐसा समुदाय है जिसमें महिलाएं चूडा पहनती हैं।

गांव के शादी ब्याह व रीति–रिवाज

सिन्धी मुसलमानों में गिनायती की एक परंपरा है। इनकी उपजातियां आपस में साटा नहीं करती हैं। एक उपजाति ही आपस में साटा कर शादियां करती हैं। इनमें अधिकतर लोग बुआ और मामा के घर शादियां करते हैं। परन्तु चाचा के यहां अभी तक शादी का प्रचलन नहीं है। शादी ब्याह के रीति–रिवाज निकाह के अलावा बाकी रिवाज सब स्थानीय भील व राजपूतों से मिलते–जुलते है। मरने पर औसर प्रथा अभी भी चालू है। इस प्रकार सिन्धी मुसलमानों की परंपराएं हिंदू और मुस्लिम परंपराओं का मिला–जुला स्वरूप लिए हुए हैं।

सिन्धी मुसलमानों के शादी ब्याह के रीति–रिवाज जो

अन्य मुसलमानों में नहीं हैं, राजपूत व भीलों से मिलते–जुलते हैं–

- सिर पर मोल बांधना जो भीलों के समान है।
- दूल्हे के हाथ में एक नेत रखना।
- कंधे पर अजरक लपेटना।
- दूल्हा–दुल्हन के पल्ले बांधकर पीछे गीत गाकर विदा करना।
- रात को दुल्हा–दुल्हन को बाजरी का खीच कुटवाना।
- बारात खाना करने पर दूल्हे को ऊंट पर बिठाकर खिलवाना।
- शगुन देखकर बारात रवाना करनी।
- वार देखकर रुकना या बारात को विदा करना।
- दूल्हे के लिए कांकण डोरा बांधना।

उपरोक्त कई प्रकार के रिवाज हैं जो राजपूतों व भील साथ–साथ अन्य जातियों से मिलते–जुलते हैं जो अन्य मुसलमानों में नहीं है।

गांव की शिक्षाव्यवस्था : आंकड़ों की जुबानी :

राजस्व गांव गागरिया की बस्तियों व ढाणियों में कुल तीन प्राथमिक विद्यालय हैं जिनके नाम व नामांकन इस प्रकार है–

क्र.सं.	विद्यालय का नाम	बालक	बालिका	कुल
1.	रा.प्रा.वि. जूना गागरिया	30	36	66
2.	रा.प्रा.वि. गागरिया गांव	35	34	69
3.	रा.प्रा.वि. मुकीख की ढाणी	20	15	35
	योग	85	85	170

गांव में सर्वे द्वारा प्राप्त आंकड़ों के अनुसार

- गांव में 6 से 14 के कुल बालक व बालिकाएं– 175 + 140
- गांव में अध्ययनरत कक्षा 1 से 5 तक – 85 + 85
- गांव में बच्चे नजदीक के निजी विद्यालयों में अध्ययनरत– 10+2
- गांव में बच्चे कक्षा 6 से 12 तक अध्ययनरत – 25 + 7
- गांव मे बी.ए. या उच्चतर कक्षाओं में अध्ययनरत – 3 + 0
- गांव में बी.ए. या उच्चतर शिक्षित व्यक्ति– 4+0
- गांव में राजकीय कर्मचारी – 4 + 0
- गांव में प्राथमिक शिक्षा 1 से 5 तक ड्रॉप आउट अनामांकित – 0 + 0
- गांव में आंगनवाड़ी – 1

गांव की शिक्षा से संबंधित आकड़ों का विश्लेषण करने पर प्रमुख बातें इस प्रकार समझ में आती हैं :–

1. गांव में कक्षा 6 से 12 तक अध्ययन करने वाले विद्यार्थी केवल 32 हैं। जिनमें बालिकाएं केवल 1 हैं इससे पता चलता है कि गांव की बालिका शिक्षा की स्थिति दयनीय है।
2. गांव में उच्च शिक्षित (ग्रेजुएट) लोग केवल 3 हैं। इससे पता चलता है कि उच्च शिक्षा गांव के लोगों की पहुंच से दूर है।
3. गांव की किसी भी बालिका ने कक्षा 10 तक पढ़ाई नहीं की है। इसके प्रमुख कारण इस प्रकार दिखाई देते हैं –
   - गांव में उच्च प्राथमिक विद्यालय नहीं होना।
   - गांव के लोगों की रूढ़िवादिता कि बेटी पराया धन है।
   - धार्मिक रूप से मान्यता है कि बालिकाओं को नहीं पढ़ाना, पर्दे में रखना, बाल विवाह इत्यादि विचारों की प्रमुखता गांव में हावी है।
4. गांव के बालकों की उच्च प्राथमिक, माध्यमिक स्तर के अध्ययनरत आंकड़ों के विश्लेषण से पता चलता है कि लोग अपने बच्चों को पढ़ाने में रुचि नहीं रखते हैं। अधिकतर बच्चे खेती, पशुपालन व घरेलू कार्यों में लगे हैं। इनके साथ ही गांव में उच्च प्राथमिक, माध्यमिक विद्यालय की कमी के कारण व नजदीकी विद्यालयों से दूरी 5–6 किलोमीटर होने के कारण बच्चे व अभिभावक उदासीन रहते हैं।
5. गांव में उच्च प्राथमिक विद्यालय की बहुत आवश्यकता है।
6. गांव के प्राथमिक विद्यालय के अध्यापकों से सम्पर्क करने पर उन्होंने बच्चों की अनियमितता और उनके पास कॉपी पेन की कमी की ओर इंगित किया। जिससे पता चलता है कि अभिभावक बच्चों की शिक्षा पर ध्यान नहीं देते हैं।
7. गांव के कुछ बच्चे मदरसों में अध्ययनरत हैं जो केवल इस्लामिक शिक्षा तक सीमित हैं।

8. गांव के विद्यालयों में एकल अध्यापक कार्यरत हैं। अध्यापकों के अभाव से विद्यालयों में समुचित समय पर शिक्षण कार्य संभव नहीं हो पाता है। साथ ही अध्यापकों पर शिक्षण कार्यों के अलावा कई सारे कार्य करने होते हैं जिससे उचित शिक्षण नहीं हो पाता है।
9. कुछ बच्चों व शिक्षकों से सम्पर्क करने पर एक समस्या यह भी स्पष्ट हुई कि स्थानीय भाषा व बाहरी शिक्षकों की बोली अलग–अलग है। अन्य जिलों से आने वाले शिक्षक स्थानीय बोली में बच्चों को समझाने में असमर्थ होते हैं। बच्चे शिक्षण को कम समझ पाते हैं जिस वजह से शिक्षण अरुचिकर हो जाता है।

सिन्धी मुसलमानों के शिक्षा में पिछड़ने के अन्य कारण–

उपरोक्त कारणों के अलावा इस गांव के सिन्धी मुसलमानों की शिक्षा के पिछड़ने के प्रमुख कारण निम्नलिखित हैं।

1. गांव के लोगों की आम राय यह है कि धार्मिक शिक्षा ही दोनों लोक/परलोक का कल्याण कर सकती है।
2. धण–धपण–धीणा (जानवर–धान खेत– दूध, दही, छाछ, बिलोणा) ही जीवन निर्वाह के लिए काफी हैं।
3. उत्तम खेती, मध्यम व्यापार व नीच नौकरी की अवधारणा अभी भी बहुलता से पायी जाती है।
4. शिक्षा को केवल रोजगार की दृष्टि से देखते हैं। गांव में कोई एक–आध पढ़ा लिखा बेरोजगार है तो इसका उदाहरण देकर शिक्षा से रोकना।
5. खेती की जमीन व पशुधन की बहुलता के कारण रोजगार के आधुनिक तरीकों के प्रति उदासीन।
6. आम दिनों में ऊंट, बकरों व गाय भैंसों का व्यापार व सर्दियों में मुख्यतः कम्बलों का व्यापार होता है। 15–16 वर्ष की आयु वर्ग के बालक इस धंधे में लग जाते हैं।
7. 14 वर्ष तक की लड़कियों की शादी करना समाज की पुरातन विचारधारा है। जिससे आज भी अधिकतर बाल–विवाह होते हैं।

इसके अलावा यह भी एक तथ्य है कि सिन्धी मुसलमानों की ऐसी स्थिति केवल गागरिया गांव में ही नहीं है, बाकी के गांवों में भी इस समुदाय की स्थिति लगभग ऐसी ही है।

गांव की शिक्षा सुधार हेतु संभावित सुझाव–

1. गांव में शिक्षा के प्रति जागरूकता पैदा करने के लिए विभिन्न प्रकार की संस्थाओं, एसएमसी व ग्राम पंचायत इत्यादि कार्य करें।
2. गांव में एक माध्यमिक स्तर तक विद्यालय खोला जाए तो अधिकतर बालक–बालिकाएं नामांकित होंगी।
3. प्राथमिक विद्यालयों में शिक्षक लगाए जाएं।
4. गांव के गरीब बालक–बालिकाओं को शिक्षण सामग्री बांटी जाए।
5. गांव के विद्यालयों का विद्युतीकरण करना चाहिए, जिससे कक्षा में प्रकाश व हवा की व्यवस्था बेहतर हो।
6. विद्यालयों का रंग–रोगन कलात्मक व आकर्षक रूप से किया जाए।
7. विद्यालय मे उचित खेल सामग्री व खेल मैदानों की व्यवस्था की जानी चाहिए ताकि आनंददायी शिक्षण संभव हो।
8. गांव में शिक्षित व्यक्तियों का समूह बनाया जाए जो विद्यालयों को सहयोग करें।
9. गांव के विद्यालयों की एसएमसी में महिला पुरुष अनुपात की बजाय कम से कम 5वीं उत्तीर्ण लोगों को लिया जाए जिन्हें शिक्षा की समझ हो।
10. गांव स्थानीय मांग के कुटीर उद्योग जैसे कांच कसीदाकारी को बढ़ावा दिया जाए ताकि आर्थिक स्तर उच्च हो व बच्चों की शिक्षा पर ध्यान दे।

ऊपर दिए गए तथ्यों और उनके विश्लेषण के आधार पर यह स्पष्ट होता है कि गागरिया गांव में रहने वाले सिन्धी समुदाय की शिक्षा व्यवस्था बहुत अच्छी नहीं है। उच्च शिक्षा का सपना तो बहुत दूर, अभी तक पहली पीढ़ी भी स्कूल तक नहीं पहुंच पाई है। इस समुदाय की शैक्षिक स्थिति के पीछे कई कारण समझ में आते हैं। इनमें से पहला कारण है, भारत–पाकिस्तान के बॉर्डर के पास की इस गांव की जटिल भौगोलिक स्थिति जहां सरकारी मशीनरी का पहिया अब तक ठीक से नहीं पहुंच पाया है। दूसरा प्रमुख कारण है, इस समुदाय की सांस्कृतिक, सामाजिक और धार्मिक मान्यताएं। ये मान्यताएं इस समुदाय को 21 वीं सदी की बाकी दुनिया से बहुत पीछे ले जा रही हैं। आधुनिक समय में आगे आने के लिए इन मान्यताओं में उचित परिवर्तन लाना जरूरी है। इस परिवर्तन की वाहक शिक्षा हो सकती है। लेकिन शिक्षा तब आएगी जब यह परिवर्तन होना शुरू हो। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि यहां की सामाजिक व्यवस्था और शिक्षा की स्थिति में क्रिया प्रतिक्रिया का संबंध है। दोनों एक दूसरे को प्रभावित कर रही हैं। जिसका परिणाम यहां के समाज की जड़ता हो सकता है।

(लेखक राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय, बाड़मेर में कार्यरत हैं)